



25. जनपद सिद्धार्थ नगर में उत्तर आधुनिकता का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

डॉ. यशवन्त यादव

(सहायक आचार्य, इतिहास विभाग)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,

सिद्धार्थनगर, 303001

Email. dryashwantyadav@suksn.edu.in

डॉ वन्दना गुप्ता

सहायक आचार्य

प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

सिद्धार्थनगर।

drvandanagupta@suksn.edu.in

सारांश

वर्तमान समय में भारतीय एवं पाश्चात्य मूल्यों एवं लोकाचारों में द्वन्द तथा टकराहट चल रही है। इस कारण भारतीय समाज की सांस्कृतिक निरन्तरता की जीवन्त प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। आज भारतीय समाज का एक बड़ा समूह धार्मिक, दार्शनिक एवं अतीत की विरासत की समझ से दूर चला गया है। समाज में एक नया विभाजन शहरी-ग्रामीण, कृषक औद्योगिक, धनी-निर्धन, साक्षर-निरक्षर के रूप में परिलक्षित हो रहा है। भारतीय समाज से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था भी छिन्न-भिन्न होती जा रही है। समाज के नौनिहाल अपने अधिकार का प्रयोग उन पर करने पर भी नहीं हिचक रहे हैं जो उनसे उम्र में बड़े हैं। लोग अपने पुष्टतैनी पारम्परिक उद्योग धन्धों को छोड़कर अधिक लाभ देने वाले विविध कार्यों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली के बजाय अब समाज में लघु परिवारों का प्रचलन या अविवाहित सम्बन्ध कायम रखा जा रहा है। वर्ण-संकर व्यक्तियों की उत्पत्ति हो रही है। ग्रामीण परिवेश के लोग गाँव से निकलकर नगरों या शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं जिससे नगरीकरण बढ़ता जा रहा है, मशीनीकरण से बेरोजगारी बढ़ रही है।

1. **बीज शब्द :** इन्स्टाग्राम, सिमुलेशन, आतंकवाद, मोबाइल, नेटवर्क, थारु जनजाति, रेमिटेंस /धन प्रेषण, लाइक एवं व्यूज, Pubg, यूट्यूब सिमुलेशन /अनुकरण |

प्रस्तावना : उदीयमान भारतीय समाज से आशय भारतीय समाज में समय सापेक्ष उत्पन्न नवीन मान्यताओं, नवाचारों तथा जीवन शैली की पृष्ठभूमि को अपनाकर तद्सम्बन्धी कार्य-व्यवहार करने से है। वर्तमान भारतीय समाज एक नवोन्मेषी प्रवृत्तियों को आत्मसात कर रहा है। प्राचीन भारतीय मूल्य, आदर्श, परम्परा को नये कलेवर में ढालकर भारतीय समाज आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है। परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है। किसी भी सामाजिक व्यवस्था में समय-समय पर परिवर्तन करना आवश्यक होता है, क्योंकि ऐसा नहीं किया जाता तो वह जनमानस को सकालीन मान्यताओं के अनुकूल नहीं बना पाता है।

जनपद सिद्धार्थ नगर गौतम बुद्ध की कपिलवस्तु से जुड़ा नेपाल सीमा पर स्थित, थारु जनजाति, हिन्दू-मुस्लिम मिश्रित आबादी वाला जिला है। यहाँ आधुनिकता देर से आई और उत्तर आधुनिकता सीधे जन संचार एवं संचार

प्रौद्योगिकी से बहुत तेजी से आ ई | उत्तर – आधुनिकता का अर्थ है-बड़े आख्यानो (धर्म, जाति, विकास) पर अविश्वास, स्थानीयता और उपभोक्तावाद का उभार एवं पहचान का विखण्डन है | उत्तर आधुनिकता के कुछ प्रमुख लक्षण जो जनपद सिद्धार्थ नगर में भली –भांति देखे जा सकते है –

2. पहचान का संकट
3. परंपरा का बाजारीकरण
4. ज्ञान का विकेन्द्रीकरण
5. उपभोक्ता समाज
6. सिमुलेशन /अनुरण

सिद्धार्थ नगर जनपद में उत्तर आधुनिकता के समाजशास्त्रीय अध्याय में यह देखा जा सकता है कि एक ही युवक सुबह थारु महोत्सव में नाचता है , शाम को इन्स्टाग्राम पर अँग्रेजी गाने पर रील बनाता है | लोटन का मेला, बर्डपुर के मेला अब इन्स्टाग्राम स्पॉट बन गया है | जहां पहले ज्ञान पंडित/ मौलवी/ मास्टर के पास था वहीं अब यू – ट्यूब बाबा के पास चला गया है | शोहरतगढ़, डुमरियागंज , नौगढ़ बाजार में जियो के बाद सर्वाधिक बिक्री चाइनीज मोबाइल और ऑनलाइन कि हुई है। गाँव में खेती कम हो रही है पर ट्रैक्टर वाली फोटो स्टेटस पर ज्यादा है – यानि असल से ज्यादा नकल |

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मतलब है किसी भी घटना को व्यक्तिगत न देखकर, समाज के नजरिए से देखना जैसे सामान्य आदमी सोचता है कि अमुख लड़का रील बना रहा है क्योंकि उसे शौक है | समाजशास्त्रीय सोचता है वो रील क्यों बना रहा है ? उसके जिले में नौकरी नहीं है, जियो सस्ता है, अयोध्या का ट्रेंड है इसलिए बना रहा है | समाजशास्त्र में किसी भी विषय को देखने के तीन मुख्य नजरिए है और यही जनपद सिद्धार्थ नगर पर लगाया जा सकता है-

1. प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य- इस नजरिए से समाज को देखने का कार्य दुर्खीमद्वारा किया गया | वह कहता है कि समाज में हर चीज का कोई काम है | सिद्धार्थ नगर में उत्तर आधुनिकता बेकारी से बचने का नया प्रकार्य कर रही है। मेला, धर्म, जाति आदि सब युवाओ को व्यस्त रख रहे है |
2. संघर्षवादी परिप्रेक्ष्य- उक्त नजरिए से समाज को देखने का कार्य मार्क्स का रहा है | वह अपनी नजर से समाज को ऐसे देखते रहें है कि – समाज में किसका फायदा, किसका नुकसान | हम देख सकते है कि सिद्धार्थ नगर में जिसके पास मोबाइल और नेटवर्क है वही नई संस्कृति का मालिक है \ गरीब थारु जनजाति के पास 4 G नहीं है तो उसकी कहानी कोई सुन रहा है |
3. अंतः क्रियावादी परिप्रेक्ष्य- इस नजरिए से समाज को देखने का काम मीडका रहा है। वह समाज को ऐसे देखते रहे है कि लोग रोजमर्रा में कैसी अर्थ बनाते है | सिद्धार्थ नगर में चाय की दुकान पर बैठ कर युवा कैसे “लाइक एवं व्युज “ की भाषा में मान सम्मान मापते है |

जनपद सिद्धार्थ नगर को समझने के लिए उसे आंकड़ों में रिश्तों में देखना होगा | जनपद की कुल जनसंख्या -26 लाख है यह आकड़ा जनगणना 2011 के अनुसार है | जनपद की सीमा नेपाल , बलरामपुर , बस्ती , गोरखपुर आदि भारत – नेपाल का सीमावर्ती समाज | जनपद सिद्धार्थ नगर की मुख्य रूप से तीन पहचान इसे पूर्वञ्चल से अलग करती है –

1. थारु जनजाति : शोहरतगढ़ और नौगढ़ तहसील में थारु समुदाय रहता है ये जिले के मूल निवासी है , पर अब हाशिये पर है | समाजशास्त्र में इसे ‘ आंतरिक उपनिवेशवाद’ कहते है।

2. धार्मिक मिश्रण : जनपद सिद्धार्थ नगर में 70% हिन्दू 29% मुस्लिम और लोटन, इटवा, डुमरियागंज में मुस्लिम कारीगर (जुलाहा) और हिन्दू किसान एक ही जजमानी में बंधे हैं।
3. प्रवासी समाज : जनपद सिद्धार्थ नगर के हर दूसरे घर में एक आदमी मुंबई, दुबई या लुधियाना में है। गाँव में बूढ़े, औरतें और मोबाइल है। इसे “रिमोट मैनेज्ड गांव” कहते हैं। जनपद सिद्धार्थनगर की जातीय संरचना मुख्यतः तीन स्तरों पर काम करती हैं।

प्रथम- ब्राह्मण, ठाकुर, कुर्मी, पठान है जिनके पास जमीन और राजनीति है। द्वितीय- यादव, चौरसिया, निषाद, जुलाहा ये छोटे किसान एवं दुकानदार के रूप में अपना अस्तित्व कायम रखे हुए हैं। तृतीय- चमार, पासी, थारू मुसहर आदि है जो मजदूर वर्ग है और मनरेगा आदि पर पूर्णतः निर्भर है। उत्तर आधुनिक समाज के में एक नया वर्गीकरण भी उभर कर सामने आ रहा है वह है जिसके पास पक्का मकान, बेटा विदेश में और स्मार्टफोन। ऐसे लोग समाज में ऊंची जाति जैसे व्यवहार पाते हैं चाहे उनकी जाति कोई भी हो। उत्तर आधुनिक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में खेती घाटे में है इस कारण किसान खुद को किसान नहीं मजदूर कहने लगे हैं। जनपद सिद्धार्थनगर में अर्थव्यवस्था निम्न बिंदुओं पर आधारित है।

1- रेंटेंस / धन प्रेषण, दुबई से आने वाला पैसा

2- योजनाओं जैसे आवास, राशन, मनरेगा का पैसा

3- सीमा बॉर्डर का धंधा इसके अंतर्गत नेपाल से लकड़ी, खाद, कपड़ा आदि का आदान-प्रदान सम्मिलित है।

जनपद सिद्धार्थनगर की सबसे बड़ी समाजशास्त्रीय समस्या प्रमुख है- अधूरी आधुनिकता, स्कूल व्यवस्था है पर पढ़ाई नहीं। सड़क बन गई लेकिन रोजगार नहीं। और मोबाइल आ गया, ज्ञान नहीं आया। इसलिए यहां की युवा पीढ़ी न पूरी तरह परंपरागत है न पूरी उत्तर आधुनिक है। वह सुबह पिता के साथ खेत में जाता है शाम को Pubg खेलता है। इस प्रकार सिद्धार्थनगर का समाज एक ऐसा समाज है जो बुद्ध की जमीन पर बसा है पर रोजगार की तलाश में बुद्ध को छोड़कर दुबई जा रहा है। जनपद सिद्धार्थनगर में उत्तर आधुनिकता के समाजशास्त्रीय अध्ययन में बहुत सी बातें देखी जा सकती हैं जैसे -

1-परिवार चूल्हे से मोबाइल तक: पहले 15 लोग एक चूल्हे पर पका भोजन करते थे अब एक घर में 4 कमरे, 4 चूल्हे लेकिन एक व्हाट्सअप ग्रुप हैं। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में परिवार टूटा नहीं है परिवार का प्लेटफॉर्म बदल गया है। पिता गोरखपुर में ई रिक्शा चलाता है, बेटा दुबई में है, मां गांव में रहती है, सभी रोज वीडियो कॉल पर बात करते हैं, साथ नहीं रहते हैं पर एक-दूसरे कनेक्टेड है। गिडेंस के शब्दों में इसे “दूरी पर घनिष्ठता” कहा जाता है।

2. मेले का उत्तर आधुनिक रूपांतरण- बर्डपुर मेला और लोटन मेला पहले पशु मेला थे। अब अवलोकन पर पता चलता है की पशु 20%, सेल्फी पॉइंट 30%। दुकान पहले हल आदि की अब हेयर स्ट्रेटर और एलईडी रिंग लाइट की अधिक है। युवा मेले में सामान खरीदने नहीं बल्कि रील बनाने जाते हैं। कुछ इस तरह का कैप्शन लगाता है “Desi Mela vibes “यही बौद्धीयार का Simulacra है। मेले की नकल मेले से ज्यादा असली दिखती है।

3. जातियों का डिजिटल अवतार: जाति खत्म नहीं हुई है बल्कि जातियों ने आईडी बदल ली है। सड़क पर जाति पूछना असभ्यता है पर फेसबुक पर यादव ब्रांड सिद्धार्थ नगर पेज चलाना गर्व की बात है। पहले पंचायत के फैसले

होते थे अब ठाकुर एकता ग्रुप इटवा के एडमिन तय करते हैं कि किसे वोट देना है। थारू जनजाति का लड़का नौकरी के लिए सामान्य वर्ग जैसा दिखने की कोशिश करता है पर चुनाव में थारू ट्राईब वाला सर्टिफिकेट निकालता है यही ल्योतार का “छोटे आख्यान का उदय” है।

4. धर्म आस्था से कंटेंट तक: अयोध्या राम मंदिर बनने के बाद सिद्धार्थनगर से बसे जा रही है इसका अवलोकन यह बताता है कि 60% लोग दर्शन से ज्यादा वहां जाकर लाइव आने के लिए जा रहे हैं। मोहरम और कावड़ दोनों में अब डी जे और ड्रोन कैमरा अनिवार्य है। हर गली का एक नया बाबा है, जो यूट्यूब पर है। धर्म अब मोक्ष का नहीं व्यूज का माध्यम है।

5. भाषा और काम: अवधी - भोजपुरी में गाली और प्यार दोनों गहरे हैं पर साक्षात्कार में लड़का कहता है “I am from Siddharth Nagar but I don't know Bhojpuri ” काम के रूप में कोई खेती नहीं करना चाहता सबको बिजनेस करना है। बिजनेस मतलब मोबाइल की दुकान, यूट्यूब चैनल या दुबई जाना।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि जनपद सिद्धार्थनगर में उत्तर आधुनिक समाज के तीन लक्षण स्पष्ट परिलक्षित होते हैं –

1. जड़ से उजड़ा नहीं जड़ को लाइव कर रहा है।

2. गरीब है पर गरीब दिखाना नहीं चाहता।

3. बुद्ध की धरती पर है पर शांति नहीं शोर की तलाश में है। सिद्धार्थनगर वह जिला है जहां आधुनिकता पूरी आई ही नहीं और उत्तर आधुनिकता सीधे मोबाइल में समाहित हो गई।

वर्तमान समय में भारतीय एवं पाश्चात्य मूल्यों एवं लोकाचारों में द्वन्द तथा टकराहट चल रही है। इस कारण भारतीय समाज की सांस्कृतिक निरन्तरता की जीवन्त प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। आज भारतीय समाज का एक बड़ा समूह धार्मिक, दार्शनिक एवं अतीत की विरासत की समझ से दूर चला गया है। समाज में एक नया विभाजन शहरी-ग्रामीण, कृषक औद्योगिक, धनी-निर्धन, साक्षर-निरक्षर के रूप में परिलक्षित हो रहा है। भारतीय समाज से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था भी छिन्न-भिन्न होती जा रही है। समाज के नौनिहाल अपने अधिकार का प्रयोग उन पर करने पर भी नहीं हिचक रहे हैं जो उनसे उम्र में बड़े हैं। लोग अपने पुष्टैनी पारम्परिक उद्योग धन्धों को छोड़कर अधिक लाभ देने वाले विविध कार्यों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली के बजाय अब समाज में लघु परिवारों का प्रचलन या अविवाहित सम्बन्ध कायम रखा जा रहा है। वर्ण-संकर व्यक्तियों की उत्पत्ति हो रही है। ग्रामीण परिवेश के लाग गाँव से निकलकर नगरों या शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं जिससे नगरीकरण बढ़ता जा रहा है, मशीनीकरण से बेरोजगारी बढ़ रही है। देश में उदारीकरण, भू-मण्डलीकरण की प्रक्रिया चल रही है जिससे भारतीय समाज विश्व के समक्ष अपनी श्रेष्ठता कायम रख सके। यौन-उन्मुक्तता से अनेक यौनिक व्याधियाँ उत्पन्न हो रही हैं। वैचारिक शून्यता बढ़ती जा रही है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति उपेक्षित होते जा रहे हैं। आज जनसंख्या वृद्धि, पर्यावरण प्रदूषण, मूल्यों का क्षरण, आतंकवाद एक भू-मण्डलीय समस्या बनकर प्रत्येक समाज को प्रभावित कर रहा है। गरीबी, निरक्षरता, मानव-अधिकारों का हनन बढ़ता जा रहा है। अभिभावकों के पारिवारिक कर्तव्यों में कमी आती जा रही है। राजनैतिक दल वोट की राजनीति के कारण भारतीय समाज में नफरत की दीवार समय-समय पर खड़ी करते रहते हैं। समाज से सामुदायिक भावना का लोप होता जा रहा है।

समूह-संघर्ष की पृष्ठभूमि विनिर्मित हो रही है। महिलाओं में आत्म-सम्मान एवं आत्म-विश्वास की भावना का जागरण हुआ है। महिला सशक्तीकरण की दिशा में विशेष प्रयास किया जा रहा है।

इस सृष्टि में समय के प्रवाह के साथ-साथ सभी प्रकार की व्यवस्थाओं, प्रणालियों, विचारधाराओं में परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत विधान है। विश्व में कोई भी ऐसा तत्व अथवा पदार्थ नहीं है जो सदैव स्थिर रहता है। प्रत्येक में कुछ न कुछ परिशोधन, परिमार्जन एवं परिवर्तन होता रहता है। वास्तव में परिवर्तन से ही प्रकृति में जड़-चेतन, अर्थात् प्रत्येक जीव और सभी प्रकार की वस्तुओं में निरन्तरता एवं गतिशीलता का संचार होता है। अन्यथा कुण्ठा, तनाव, संसास, मनोउद्वेग, द्वन्द्व से आच्छादित परिवेश विनिर्मित होने से किसी भी व्यवस्था, प्रणाली, विचारधारा, जीवनशैली के पतन का खतरा उत्पन्न हो जाता है। जहां तक किसी भी 'समाज' की बात है तो वह हमेशा ही परिवर्तनशील एवं गत्यात्मकता से सम्युक्त होता है। इस बात की पुष्टि प्रसिद्ध विचारक मैकाइवर एवं पेज के निम्न कथन से होता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि-"समाज परिवर्तनशील और गत्यात्मक दोनों है।"

आधुनिक समय में भारतीय समाज परिवर्तन, रूपान्तरण एवं गतिशीलता के चरमोत्कर्ष की ओर अग्रसर है। भारतीय समाज भूमण्डलीकरण से उपजने वाली बहुआयामी मान्यताओं का अनुयायी बनकर नवीन कलेवर धारण करता जा रहा है। इक्कीवीं सदी में पर्दापण करने के साथ ही भारतीय समाज एवं शिक्षा पर यहां के प्रबुद्ध विचारकों ने चिन्तन, मनन-अनुशीलन को प्रमुखता देते हुए मूल्यों के अनुस्थापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास, मानवाधिकारों की संरक्षा, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से वंचितों के कल्याण, महिलाओं की संस्थिति के उन्नयन, व्यावसायिक कुशलता के विकास, गुणवत्ता-उन्नयन आदि आवश्यकताओं की पूर्ति में सजगता से तल्लीन हो गए हैं। ज्ञानाधारित समाज के सृजन की संकल्पना को साकार करने की दिशा में ज्ञान आयोग का गठन एक अभिनव प्रयास था जिसने अपने प्रतिवेदन में महत्वपूर्ण सुझाव दिया है।

भारतीय समाज निरन्तर निखर रहा है। उसका बहुविध काया-कल्प हो रहा है। जीवन के प्रत्येक महल में नवीनता की प्रतिष्ठा हो रही है। यद्यपि भारतीय समाज अपने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अनेकों झंझावातों, आक्रमणों, अधिपत्यों से ग्रसित रहा है। भारतीय समाज एवं संस्कृति की विनष्टता के लिए अनेक बाह्य एवं आन्तरिक दबावों एवं कुचक्रों का दौर चला किन्तु भारतीय समाज एवं संस्कृति अपनी विशिष्टता, एकताबद्धता, सत्यनिष्ठा से प्रत्येक परिस्थितियों में चिरंजीवी एवं अक्षुण्ण बना रहा। शैने: शैने: भारतीय समाज, वैश्विक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अपने को सहभागी बनाने की दिशा की ओर उन्मुख है। भारतीय समाज में अनेकों नयी-नयी मान्यताओं प्रवृत्तियां उदीयमान हो रही हैं।

भारतीय समाज में उदीयमान प्रवृत्ति के रूप में वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण की अवधारणा अत्यधिक बलवती होती जा रही है। यह मूलतः उदारीकरण एवं निजीकरण पर आधारित वह संकल्पना है जो सभी देशों को एक दूसरे से मित्रतापूर्ण, सहयोगात्मक सम्बन्ध बनाकर एक मंच से व्यापार-वाणिज्य एवं अन्य गतिविधियों के संचालन को प्रमुखता देती है। वैश्वीकरण कच्चे माल, श्रम, पूंजी, संयंत्र, बाजार को देखकर जहां जो चीजें सस्ती हों उनको क्रय करके उत्पादन एवं विपणन करने हेतु सेवाओं का, नेटवर्क बनाने पर बल देती है। वैश्वीकरण के मंशा के अनुकूल विकसित देश तो अत्यधिक लाभांश अर्जित कर रहे हैं किन्तु विकासशील देशों को उससे नुकसान उठाना पड़ रहा है। भारत में भी वैश्वीकरण के कारण स्थनीय लघु एवं कुटीर उद्योग बन्द होने के कगार पर हैं। कई मीलों, कल-कारखाने बन्द हो गये हैं। इससे भारतीय अर्थ-व्यवस्था कमजोर होती जा रही है। भारतीय समाज में पाश्चात्त्यीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां यहां पर सस्ते कच्चे माल खरीद कर उससे उत्कृष्ट चीजें निर्मित करके अत्यधिक ऊँचे दामों पर आकर्षक पैकिंग करके बेच कर मुनाफा कमा रही हैं। भारतीय समाज के लोग

फैशन परस्ती एवं विदेशी आकर्षण के चकाचौंध में अपने आप को आधुनिक एवं वैश्वीकरण का मुकाबला करने में सक्षम बनने का दिवास्पन देख रहे हैं। इससे भारतीय समाज के मूल्यों, परम्पराओं, संस्कारों एवं आर्थिक पहलुओं में व्यापक गिरावट देखने को मिल रही है।

प्रसिद्ध अमेरिकी विचारक जूडिथ बटलर ने लिखा है कि-“जेन्डर” का सम्बन्ध समाज द्वारा स्वीकृत क्रियात्मक उपलब्धियों या निषेध से है। यह एक शैली है जो समाज द्वारा निर्धारित संकेतों, आन्दोलनों व अधिनयमों के गठन के तरीके के रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में जेन्डर संस्कृति द्वारा पहले से निर्धारित स्त्री-पुरुष का शारीरिक संरचना के आधार पर किया गया विभाजन है जो स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व के सामाजिक विचार पर आधारित होता है। वर्तमान समय में स्त्री और पुरुष के अलावा एक इतरलिंगीय किन्नर या हिजड़ा भी है, समाज में सभी लिंग के लोगों को समान अधिकार दिया है। किन्तु समाज में आज भी लिंगीय विषमता परिलक्षित हो रही है।

उत्तर आधुनिकता की मूल चेतना आधुनिक ही है। क्योंकि इसका विकास एवं इसकी अस्मिता का आधार वही उद्योग हैं जो आधुनिकता की देन हैं। टॉयनबी के अनुसार आधुनिकता के बाद उत्तर आधुनिकता तब शुरू होती है जब लोग कई अर्थों में अपने जीवन, विचार एवं भावनाओं में तार्किकता एवं संगति को त्याग कर अतार्किकता एवं असंगतियों को अपना लेते हैं। इसकी चेतना विगत को एवं विगत के प्रतिमानों को भुला देने के सक्रिय उत्साह में दीख पड़ती है। इस प्रकार उत्तर आधुनिकतावाद आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की समाप्ति के बाद की स्थिति है।

निष्कर्ष : जनपद सिद्धार्थ नगर पर उत्तर आधुनिक समाज का एक गहरा एवं बहुआयामी प्रभाव पड़ा है। जो जिला कभी अपनी भौगोलिक दूरियों और पारंपरिक कृषि आधारित जीवन शैली के लिए जाना जाता था वह अब सूचना प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और सांस्कृतिक बदलावों के कारण तेजी से आधुनिक और उत्तर आधुनिक प्रवृत्तियों को अपना रहा है। इन सभी बातों का समाजशास्त्रीय संदर्भ में अधिक अहमियत देखी जा सकती है। सिद्धार्थ नगर में उत्तर आधुनिकता अधूरी आधुनिकता के ऊपर आ गयी है। यहाँ फेक्ट्री नहीं आई पर फेसबुक आ गया। इसलिए यहाँ उत्तर –आधुनिकता पश्चिमी जैसी व्यक्तिवादी नहीं, बल्कि जुगाड़ वाली उत्तर-आधुनिकता है, जहाँ लोग परंपरा को छोड़ते नहीं, उसे रील में पैक के आर बेचते हैं। सिद्धार्थ नगर जनपद में उत्तर आधुनिकता का मतलब है- परम्परा गयी नहीं, परम्परा का ऑनलाइन शोरूम खुल गया है।

संदर्भ सूची :

1. सिंह, योगेन्द्र-2004: आइडियोलॉजी एंड थ्योरी इन इंडियन सोशियोलॉजी, रावत पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।
2. ल्योतार, ज्यो फ्रांस्वा (1984). The Postmodern Condition: A Report on Knowledge. मूल सिद्धांत - बड़े आख्यानों का अंत।
3. बौद्रिआर, जीन (1994). Simulacra and Simulation. नकल के असल से ज्यादा असली होने का सिद्धांत।
4. गिडेंस, एंथनी (1991). Modernity and Self-Identity. दूरी पर घनिष्ठता और पहचान का संकट।
5. हार्वे, डेविड (1989). The Condition of Postmodernity. पूंजीवाद और संस्कृति का संबंध।
6. जेमसन, फ्रेडरिक (1991). Postmodernism, or, The Cultural Logic of Late Capitalism.
7. बियरस्टेड, रॉबर्ट-1990: सोशल आर्डर, टाटा, मैग्रा-हिल पब्लिशिंग कं0 लिमिटेड, मुम्बई।



8. दुबे, एस0सी0-1977: अंडरस्टैंडिंग सोसायटी, सोशियोलॉजी, द डिसिप्लिन एंड इट्स सिग्नीफिकेंस, पार्ट प्, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
9. जयराम, एन-1987: इंट्रोडक्टरी सोशियोलॉजी, मैकेमिलन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली।
10. स्वडेर्का, रिचर्ड-2003: प्रिंसिपल्स ऑफ इकोनोमिक सोशियोलॉजी, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन एंड आक्सफोर्ड।
11. पचौरी, सुधीश: उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श।
12. भटकल, एस0-1998: कंटेम्पोरेरी इंडिया, जी0आर0 भटकल मेमोरियल लेक्चर्स, बाम्बे, पापुलर, प्रकाशन।
13. सिंह, आर0पी0-2002: ए क्रिटिक ऑफ इंडियन एजुकेशन, नई दिल्ली, रवि बुकट्रस्ट।
14. रूहेला, एस0पी0-2000: इंडियन सोसायटी एंड एजुकेशन इन 2010, नई दिल्ली, इण्डियन पब्लिशर्स, डिस्ट्रिब्यूटर्स।
15. कुमार, कृष्ण (2016). उत्तर आधुनिकता और भारतीय समाज. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. सिंह, योगेन्द्र (2000). Culture Change in India: Identity and Globalization. रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
17. जोशी, पी.सी. (2008). भारतीय समाज में उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियाँ. समाजशास्त्रीय समीक्षा, अंक 34।
18. दुबे, एस.सी. (1990). Indian Society. नेशनल बुक ट्रस्ट।
19. अवस्थी, ए.पी. (2019). पूर्वांचल में सामाजिक परिवर्तन. उत्तर प्रदेश समाजशास्त्र परिषद।
20. जनगणना 2011 - District Census Handbook, Siddharthnagar, Uttar Pradesh. भारत सरकार।
21. जिला गजेटियर सिद्धार्थनगर (1988). उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ। थारू जनजाति और जमींदारी उन्मूलन का विवरण।
22. मिश्र, रामदेव (2015). थारू जनजाति: शोहरतगढ़ क्षेत्र का मानवशास्त्रीय अध्ययन. सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु।
23. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, सिद्धार्थनगर (2022-23). अर्थ एवं संख्या प्रभाग, सिद्धार्थनगर।
24. सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के समाजशास्त्र विभाग के लघु शोध प्रबंध - सीमा जनपदों में प्रवास और सामाजिक संरचना (2021)।
25. Economic and Political Weekly (EPW) - Migration from Eastern UP पर लेखा।
26. उत्तर प्रदेश समाजशास्त्र परिषद की संगोष्ठी रिपोर्ट, 2022 - विषय: डिजिटल मीडिया और ग्रामीण युवा।